कविता का सारांश

यह मधुऋतु दो दिन को भूली-सी आ गयी है। कवि कहता है कि इस नयी व्यथा में आयी साथिन को मैं एक छोटी सी कुटिया रच दूँ। उस नीड़ के ऊपर आसमान और नीचे भूमि है। सब से अलग नीड़ मैं बना दूँ। कवि सूखे तिनकों से कहता है कि जंगल के नित्य पतझड़ से भागो क्योंकि शिशिर बीत गया है और वसंत आ गया है। इस पृथ्वी में आशाओं से अंकुर झूलेंगे और पल्लव पुलकित होंगे। यह मेरे पल्लवों की लघु दुनिया है और यह किसको बुरा लगेगा? मानस नलिन नयन को चुंबन लेकर और जगाकर मलयानिल की लहरें सिहर कर और काँपते हुए आएँगी। जवा-कुसुम के समान प्रकृति की पूर्व दिशा में उषा खिलेगी। हँसी भरे अरुणाधर का राग दिन को रंगेगा। चंद्र की किरणें अंधकार का समुद्र लाँघकर आएँगी। रात में अंतरिक्ष ओसकणों को छिड़केगा। कवि हमें बताते हैं कि इस एकांत सृजन में कुछ बाधा मत डालो। जो कुछ अपने सुंदर से हैं इनको दे देने दो।